IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

बौद्ध भिक्षु (साधु-सन्यासी) एवं विहार (मठ) की संस्कृति एवं परम्पराऐं

डॉ. करन सिंह
(एम.ए, नेट, जे.आर.एफ. सेट, एवं पी.एच.डी-समाजशास्त्र)
सहा. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
शा. छत्रसाल महाविद्यालय पिछोर, जिला शिवपुरी
sengarkaran@yahoo.in

सारांशः-

अध्येता द्वारा प्रत्यक्षतः विभिन्न भिक्षुओं, उपासकों, विहारों, बौद्ध संस्कृति के विद्वानों, जानकारों तथा अप्रत्यक्ष रूप से बौद्ध साहित्य के त्रिपिटक, विनयपिटक, भगवान बुद्ध और उनका धम्म इत्यादि तथाअन्य महत्वपूर्ण साहित्य से प्राप्त जनकारी से **"बौद्ध भिक्षुओं (साधु-सन्यासी) और विहारों (मठो) की संस्कृति एवं परम्पराओं"**को पूर्व व वर्तमान सन्दर्भ में जानने-समझने का प्रयास किया गया। भिक्षु बनने की प्रक्रिया से लेकर विहारों में उनकी जीवनशैली--सदाचरण, करूणाशील, चरित्रवान एवं तप-साधना के इर्द-गिर्द रहती है। धर्म के सिद्धांतो, नियमों के अनुसार उनका आचारण कठिनाई से युक्त रहता है। **चीवर** धारण करने से पूर्व उपसकों कोभिक्षुओं द्वारा आचरण का अनुभवविभिन्नशिवरों, कार्यक्रमों के माध्यम से कराया जाता है दीक्षा लेने के बाद स्थाई रूप से चीवर धारण करने पर भिक्षु अपनी संस्कृति एवं परम्पराओंके अनुसार जीवन जीते है तथा तप-साधना व वैराग्य के माध्यम से निर्वाण (संबोधि) प्राप्ती का मार्ग अपनाते है। भिक्षु अपनीध्यान- साधना व ज्ञानज्योति से उपासकों को मानवकल्याण, समरसता, सम्भाव एवं करूणाशीलता का मार्ग दिखाते है जिससे संसार में शांति-स्थापित रहे। आमजन भी भिक्षुओं की कठिन जीवनशैली, सदाचरण से उपासकों के रूप में शिक्षा व मार्गदर्शन प्राप्त कर अपने जीवन को सुख-समृद्धि के लिये विहारों में तथा शिविरों में सहभागिता करते है। बौद्ध धर्म एवं भिक्षुओं की संस्कृति भी सनातन संस्कृति की तरह साधु-सन्यासियों व संतों के माध्यम से मानवकल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

कंजी शब्दः- भिक्षु,विहार, संस्कृति, विनय पिटक, करुणा, दस शील, अष्टांगिक मार्ग,तप-साधनाबौद्ध धम्म।